Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक चुप्पे शख़्स की

डायरी

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

igam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu
Acc No. 9778
Dated 22-12-2023

एक चुप्पे शख़्स की

डायरी

nigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बोधि
प्रहित जन-जन के लिए

बोधि प्रकाशन
एफ-77, सेक्टर 9, रोड नं. 11,
करतारपुरा इंडस्ट्रियल एरिया, बाईस गोदाम, जयपुर-302006
दूरभाष : 0141-2503989, 98290-18087
ई-मेल : bodhiprakashan@gmail.com

कॉपीराइट © मायामृग

प्रथम संस्करण : मई, 2013
ISBN : 978-93-83150-08-3
कम्प्यूटर ग्राफिक्स : बनवारी कुमावत 'राज'
मुद्रक : तरु ऑफसेट, जयपुर # 09829018087
मूल्य : ₹ 50/-

EK CHUPPE SHKHAS KI DIARY... by Maya Mrig
igam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.Funding by IKS-MoE

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अग्निशेखर और क्षमा कौल
द्वारा यह
पुस्तक सप्रेम भेंट

'तुम' को

nigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

परिचय

मायामृग नाम मैंने खुद रखा। परिजनों ने नाम दिया था सन्दीप कुमार, जो अब सिर्फ सरकारी रिकॉर्ड में रह गया है। मेरा जन्म 26 अगस्त, 1965 को फाजिल्का (पंजाब) में हुआ। जन्म के दस दिन बाद ही परिवार को पंजाब छोड़ हनुमानगढ़ (राजस्थान) आना पड़ा, मेरे जीवन के शुरुआती 25 साल यहां बीते। इसके बाद जयपुर आकर बस गया। पहले शिक्षा विभाग में सरकारी नौकरी की और नौकरी छोड़कर पत्रकारिता। इसके बाद मुद्रण और प्रकाशन को व्यवसाय के रूप में चुना।

प्रकाशित पुस्तकें : तीन कविता संग्रह- शब्द बोलते हैं (1988), ...कि जीवन ठहर न जाए (1999), जमा हुआ हरापन (2013)। कात रे मन...कात (2013, स्वतंत्र पंक्तियां), एक चुप्पे शख़्स की डायरी (2013, गद्य-काव्य)

सम्प्रति- प्रकाशन और लिखने-पढ़ने के काम में व्यस्त हूँ।

सम्पर्क-

बोधि प्रकाशन, एफ-77, करतारपुरा इंडस्ट्रियल एरिया
बाईस गोदाम, जयपुर-302006
मो : 098290 18087

amnigarh Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-20

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

01

एक चुप्पे शख़्स की डायरी

पहला पन्ना

आज फिर उसका खत आया है। लिखना तो उसे वही होता है हर बार, पर हर खत को पढ़ना होता है अलग-अलग तरीके से...। लिखने से अधिक खत पढ़ने से तय होता है उसका अर्थ। उसे शायद ही पता हो कि इस बार जो अर्थ मिला है मुझे वह बरसों तक पीछा करेगा, उसके मुझे छोड़कर चले जाने के बाद भी। कितने सारे रहस्य रह गए बाकी...कितने सारे सवाल रहे...। पूरा होने की इच्छा में अधूरापन ज्यादा सालता है। कुछ बातें साथ ले जाता वह तो कितना अच्छा होता, उनमें वे भी शामिल होती, जिन्हें हर बार कहने से पहले चबा गया मैं भीतर ही भीतर...। वह भी तो बहुत घुन्ना है, चुप्पा...क्या ले गया, क्या छोड़ गया...बताएगा नहीं कभी कमबख्त...।

ठीक है, आने दो अब अगला खत...मैं पढ़ने के तरीके बदल लूंगा...।

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

02

एक चुप्पे शख़्स की डायरी

दूसरा पन्ना

किन्हीं कमजोर पलों में नहीं स्वीकारा मैंने सच...सच तो ये कि यही मजबूत लम्हे थे जीने के...सच कमजोरियों में बयां नहीं था, कमजोरियां थीं जिन्हें सच में बयां किया...। अपने सच बचाए रखकर...तुम हर बार वही परिभाषाएं रटते रहे...हालात हर बार बदल बदल जाते रहे...तयशुदा जवाबों से वक्त के सवाल हल नहीं हुए कभी...जाता हुआ जवाब, आते हुए सवाल को देखकर रास्ता बदलता रहा...।

मेरा क्या है, मैं तो चुप रहूंगा तुम्हारे बोलने से पहले भी, बाद भी...।

मेरे सवाल कहां रोकते हैं रास्ता, तुम्हारे जवाब का...

amnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-26

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

03

एक चुप्पे शख़्स की डायरी

तीसरा पन्ना

रात के नौ बज रहे हैं...रात काली से और काली होने लगी है..। मैं पराजय स्वीकार करने की ओर बढ़ रहा हूं। जीत की कामना से मुक्त होने की छटपटाहट...बचना मुश्किल है...पर पराजय को स्वीकारने में हड़बड़ाहट नहीं...बस एक शांत चुप है...। जीत में स्वीकृति की जरूरत नहीं पर...जब तक हार मान न लूं, तब तक हारता नहीं।

जीतने की इच्छा के हाथों हर बार हार जाता हूं...जाने क्यों...

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

04

एक चुप्पे शख़्स की डायरी

चौथा पन्ना

जिसके होने से आकाश नीला है...जिसके होने से पानी रंग गंध और स्वाद से मुक्त है...जिसके होने से सागर जल की अथाह राशि लेकर भी प्यास से व्याकुल है...जिसकी गति हवाओं में है पर स्थिरता जिसका आधार है...वह रहस्य जानने आया...तुमने अनेकानेक सूचनाओं से लाद दिया...बस एक बार मुस्कुरा कर कह सकते थे...हां ये सब मेरी वजह से है...मैं मान लेता...मानने की ही तो बात है सब...।

तुम्हें सच पता था...मुझे वही मानना था...जो तुम कहते...

amnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-20

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

05

एक चुप्पे शख़्स की डायरी

वां पन्ना

पूरे...नीले चांद को एक किनारे पर टांगकर लगातार ताकते हुए चलती रहती है यात्रा...। जितना आगे जाना हो, उतना पीछे जाना पड़ता है हर बार...गति के नियम मुझ पर ही क्यूं लागू हैं सारे के सारे...। कायदों को फाड़ने का साहस जुटाने के लिए कायदों से गुजरना है...यह देर से समझ आया...। हर बार एक सी नहीं होती राह...चाहे कितनी भी चला हूं उस पर...।

इस पन्ने के एक कोने पर नीले पेन से चांद बना है...स्याही वाला पेन ही नीला चांद उकेर सकता है...

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

06

एक चुप्पे शख़्स की डायरी

वां पन्ना

जो दरवाजा ठीक मुंह पर बन्द कर दिया गया...कितना निष्ठुर रहा होगा भीतर रहने वाला...ढीठ मैं भी कम नहीं था, दस्तक हर बार उसी दरवाजे पर दी...तुम्हें लगता है एक कमरा भर हवा काफी है जीने के लिए...मुझे आसमां भर हवा कम लगती है सांस लेने को...हां, तुम जीने को दम भरकर कह लेते हो, मैं कहता नहीं बस...।

स्याही धुंधली है पर पढ़ सका किसी तरह

amnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-26

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

07

एक चुप्पे शख़्स की डायरी

वां पन्ना

उस वक्त जब तय नहीं हो पा रहा था कुछ भी। कोई फीता नहीं था कि जिससे मापा जा सकता सच और अधूरे सच के बीच का फासला...। अनिश्चय था...भ्रम था...एक जाल था कि जिससे बाहर जाने की कोई सूरत नहीं थी...ठीक उसी वक्त गुरूता भरे हाथों ने कनपटियों को छुआ...उठो, वत्स...तुम आखिरी सच तक पहुंच गए हो...आज से तुम बुद्ध हुए...।

नहीं पूछ सका बोध अबोध का फर्क...चुप्पे के पास वैसे भी बोलने को क्या था, चुप था...और वापसी का रास्ता अब भी खुला था...

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

08

एक चुप्पे शख़्स की डायरी

वां पन्ना

जिस सड़क पर अंधेरा ही अंधेरा था...उस पर सिर्फ मैं था...हम दो भले ही थे, पर एक दूसरे से डरते हुए...अंधेरे को लगता था मैं रोशनी हूं....मुझे पता था अंधेरा काटने का मंत्र भूल गया हूं मैं...।

इस पंक्ति को उलट कर पढ़ा जा सकता था...जिस सड़क पर सिर्फ मैं था...वहां अंधेरा ही अंधेरा था...और यही होना था...तुम होते तो बात और होती...तुम नहीं हो तो बचा सिर्फ मैं....शायद रोशनी का मंत्र भूल जाने का नतीजा है यह...।

काली स्याही की पूरी दवात उलट गई कमबख्त...हर सड़क काली...

amnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-20

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

09 वां पन्ना

तुम सागर किनारे के दिन भूल चुके क्या...लहरें तुम्हारे पैरों को छूकर लौट जातीं तो लगता था...इसीलिए आई थीं...दूर देश को जाते जहाज कितना कुछ लाद ले जाते हैं अपने साथ...पर जो छोड़ जाते हैं, वह अपने ही देश में परदेश भोगता है...तुम्हें याद होगा ना...वह आखिरी दिन...तुम तो एक दिन और होता...सागर को बहते देखने का...जहाज को तैरते देखने का...तैरने की कामना का भार बढ़ता गया...अपने ही भार ने डुबो दिया...समंदर का पानी आखिर कितना उछालता...।

कुछ भीग गया है कहीं-कहीं से...एक कोने से...

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-20

Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कभी आसमां खींच लेता...कभी धरती पकड़ लेती...मैं भला कहां पहुंचता...दरअसल लड़ाई तुममें और गुरूत्वाकर्षण में थी...मुझे सिर्फ खिंचते रहना था...इधर...या...उधर...।

और कितना खींचोगे अब...क्या टूटने की हद तक

amnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-20

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

11 एक चुप्पे शख्स की डायरी

वां पन्ना

तुम्हें अपनी बेचैनियां कहनी होती हैं, मुझे अपना सुकून तलाशना होता है...प्रेम अगर बेचैनी से परे कुछ नहीं तो प्रेम की तलाश पूरी होने तक यह सफर बीच में छूट जाना तय है...हर कदम जो इस राह पर पड़ा, उसके निशान सिर्फ देखने के लिए नहीं...पीछे आते को राह दिखाने के लिए भी हैं...। चलो...यह सफर यूं ही सही...तुम कहते रहो, मैं चुप रहूंगा...।

एक और एक दो कि...एक और एक ग्यारह...सारी कहावतें चुप खड़ी हैं...

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gagan Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वां पन्ना

प्रेम के वे दिन...जब पेड़ों से छिपाया प्रेम...रास्तों से मिटाया प्रेम...आंखों से ना बोले...जुबां से ना फिसले...दिल से थामे रखा...हाथ टटोलते रहे बार बार, सब अपनी अपनी जगह था...।

पेड़ सूखे कि प्रेम, हर पत्ती पर लिखना चाहा बयान प्रेम का...पलकें गिराकर आंखों से छिपाना चाहा सूखना उनका...जुबां पहले प्रेम बोलती...फिर सच...। इस शक्ल में जाने किसका चेहरा है...जिस पर कुछ नहीं लिखा...।

छिपाने से अगर छिप जाता सच तो कह सकता...
कितना प्रेम है अब भी मेरी दुनिया में...

amnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वां पन्ना

छू लेने भर को आया...छुअन जाती नहीं, जाने के बाद भी...। विघटित हो जाना प्रेम के घटित हो जाने को चुनौती नहीं है...मृत्यु (जो मर जाएगा अंततः) और मिथ्या का अंतर शास्त्रीय नहीं पर...सब कुछ तो नहीं लिखा रहता शास्त्रों में...नए भी तो बनने होते हैं...अपनी मृत्यु के ठीक आखिरी पल तक जिंदा रहता है प्रेम...।

इतना भी क्या असमंजस भई...है सो है, कोई शास्त्र कहे ना कहे...

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-20

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

14 वां पन्ना

एक चुप्पे शख़्स की डायरी

मंदिर में होती आरती में घड़ियाल को झुला-झलाकर टनके बजाते हुए लय की तांत से निकला बांध लेने वाला सूत...बंध गया भक्त का मन...भक्त के मन में घटित हुई आरती...लय ही तो है जिसमें एक तान पर तना रहता है प्रेम में डूबा है जो...मूर्ति को गढ़ते हाथ, तानपूरे पर चलती उंगुलियां...तबले पर थाप देती हथेली...लय की खोज ने गढ़ना सिखा दिया...जीवन को...लय टूटी उसका होना पता चला ..लय खो जाने पर प्रेम का न रहना समझ आया...यह समझना जरूरी था...पर कीमत ज्यादा चुकाई...।

ये जो लिखा है, क्या इसमें कोई संगीत है...मुझे रुदन क्यूं सुनता है फिर...

mnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

15 वां पन्ना

एक चुप्पे शख़्स की डायरी

प्रेम की पीठ पर लिखा था उदासी...बस पलट कर नहीं देखा...चेहरे पर चमक बढ़ती देख सके सब...पीठ पर वे निशान नहीं दिखे जो वक्त को ढोने से बने...पीठ दिखने को पीठ उघाड़नी होती है...सभ्य लोग उघाड़ते नहीं...ढंकते हैं...।

सब कुछ ढंकने से ढंका जा सकता तो कितना अच्छा होता...

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-20

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

16 वां पन्ना

एक चुप्पे शख़्स की डायरी

बोलता तो क्या बोलता...और बोलकर कह पाता कि न कह पाता...। जो कहना है उसे घुमा फिराकर हजार तरीके से कह ना सकूं...और विवशता माथे पर चिपकी विज्ञापन करती फिरे कि...कहना चाहता था पर कह ना सका...इससे बेहतर यह कि मान लिया जाए...कुछ कहता ही नहीं...चुप्पा था कमबख्त...नहीं कहा तो नहीं कहा...।

जो कहना चाहता हूं...वही कहने के लिए चुप हूं...

mnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

17

एक चुप्पे शख़्स की डायरी

वां पन्ना

संबंधों से तय होगी जरूरतें कि जरूरतों से तय होंगे संबंध...जो बदलते गए, वे संबंध रहे होंगे...जो दिखते रहे वे जरूरतों में शामिल थे...बदलना भी तय था, दिखना भी...संबंध भी सच थे...जरूरतें भी...चुप रहकर संबंध निभाए...बोल-बोलकर जरूरतें दर्शायी...इस ढेर सारे संदेह के नीचे सम्बंध दबे हैं कि जरूरतें, चलो खोजते हैं...।

कुछ तो है यहां, मिले भले ना मिले...

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

18 वां पन्ना

एक चुप्पे शख़्स की डायरी

किंवदंतियों से चलकर...कथाओं में जहां आकर ठहर गया प्रेम, वह नीलाए आसमां का छोर नहीं था, धरती का ही फटा कोना था...चलो, वहीं कदम रखें...उड़ान जहां से शुरू हुई...।

मुक्ति की कामना व्यर्थ हुई...गीता का अठारहवां अध्याय नहीं था यह...

mnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

19 वां पन्ना

एक चुप्पे शख़्स की डायरी

बीत जाना...रीत जाना नहीं है...यह समझ आने तक बीता भी...रीता भी...। जो आता गया...बिताता गया...लौटने की कामना से मुक्त...दंभ चलने का था, बीतते गए पल रास्ते के पेड़ों पर गुज़र जाने की निशानी के लिए टांग दिए...खुश था...कि जो बीत गया...रीत गया...। वक्त लगा जानने में...कि...बीता कुछ और था...रीता कुछ और...।

हर पंक्ति के दोनों तरफ खाली जगह है...शायद दो हाशिये...

amnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-20

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

20 वां पन्ना

एक चुप्पे शख़्स की डायरी

चीखने से हवा में आवाज़ तो भर जाती है पर सन्नाटा टूटता नहीं...तुमने दीवारों के बीच आले नहीं छोड़े...तुम्हारी जुबान बोलती रहती है प्रेम...प्रेम....और पीठे की ओर बांधे हुए हाथ बुनते रहते हैं... संनाटा...रेखाएं, हथेलियां...उंगुलियों के पोर तक में ठक्-ठक् सुनाई देती है...बार बार दी गई तुम्हारी दस्तक की...पर...दीवारों के पार तक...आवाज़ जाती जरूर है...सुनता कोई नहीं...।

लकीरें बना-बनाकर काट दी गई हैं, समझना जरा मुश्किल है...पर समझना तो होगा ही...

mnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वां पन्ना

सागर तल में पलते रहे पहाड़..सदियों...बस जरा घुटने मोड़े सागर ने और उभर आया हिमालय...। जाने...क्या क्या डूबा होगा...कौन पूछता...क्यों पूछता...तुमने वह देखा...जो उभरकर जमीन से ऊंचा दिखता है...तुम्हें चढ़ाइयां चुनौती की तरह दिखती हैं और तुम तैयार हो...जानता हूं पहुंच जाओगे सबसे ऊंची चोटी पर....तुम चोटी से देखना सागर का तल...मैं तल से निहारूंगा चोटियां...मेरी निगाहें ऊपर देखेंगी...।

गहराईयां ही ऊंचाईयां हैं...क्या वहां खड़े होकर कह सकोगे तुम...

amnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-20

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

22

एक चुप्पे शख़्स की डायरी

वां पन्ना

सीले हुए दिनों में आए तुम...नमी लेकर...। धूप यूं भी तो उड़ा दी थी मुंडेर से...। अलगनी पर डाले कपड़े सूखे नहीं तब से...तहाकर रखे गरम कपड़ों से गई नहीं तुम्हारी गंध...। अलसाई सी गंध धीरे धीरे आकार लेती है तुम्हारा...धुंधले से चेहरे में ही सही ढूंढ लाती है... तुम्हारे होने को भुला नहीं पाई यह...। बीत गई सो बात गई कहने वाले जाने कौन लोग थे...यहां सब बीतता है...बात के सिवा...।

गीले पन्ने पर इतनी फफूंद लग जाती है, आज पता चला...

mnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वां पन्ना

जाने कितने चश्मे बदल-बदल कर पढ़ा...कुछ भी पढ़ने जैसा नहीं...कहीं भी साफ नहीं लिखावट...इस पन्ने पर अंदाज से पढ़ा...शायद जीवन लिखा है...चिपके हुए दूसरे पन्ने पर प्रेम...। जो दिखता है वही है कि कुछ और...यकीन से नहीं कह सकता...जीवन वाले पन्ने के साथ प्रेम वाला पन्ना चिपका है कि प्रेम वाले पन्ने से जीवन वाला...डायरी के भीग जाने पर कुछ भी पता नहीं चलता... जाने दो...पन्ने पलटकर भी क्या होगा...पढ़ने में तो न यह आता है...न वह...।

गलत लिखा है कि...पढ़ा गलत गया...पता नहीं...

amnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

24 वां पन्ना

एक चुप्पे शख़्स की डायरी

तपते दिन का कोई सिरा पकड़कर गईं थीं आहटें...गुमशुदा की तलाश के पोस्टर के साथ चिपकीं रहीं...हर मौसम में...। धूप ने सुखाया, हवा ने उड़ाया और पानी ने भिगोया बहुत...जिन सूखे पत्तों को छूकर निकली थीं...वहां खड़खड़ाहट भर हुई...लौटी नहीं...। आहटें उन कदमों में जा छिपीं...कि जिन्हें उठना था इक उम्र भर पहले...।

ठहरे हुए कदमों में थम जाती होंगी आहटें भी तो...

mnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

संभावनाएं संभाले रखीं...आशंकाएं सुरक्षित रहीं...। जो कहा जाना था...एक संभावना थी...जो सुना जाना था...आशंका थी...। चुप एक सुरक्षित पगडंडी थी...जिस पर दूर तक चलते रहे हम...। संक्रामक सिर्फ हंसी नहीं होती...। चुप्पी...पल से शुरू होकर सदियों तक फैल जाती है...। सदियां हुईं जब तुमने कहा था...बस एक पल रुको, लौटने तक इंतजार करना...।

सदियों की चुप्पी संभावना में टूटेगी...कि आशंका में...पता नहीं

amnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

26 वां पन्ना

एक चुप्पे शख़्स की डायरी

तुम से चलकर मुझ तक आते आते...थक गए हैं दिन...। तरोताजा सुबह में तुम लिखते हो ओस...मुझ तक थकी सांझ में कुहरा पहुंचता है...सड़क उघड़ी है कि पांव में छाले हैं...पता नहीं...। तुमने कामनाएं लिखीं...मैंने अपेक्षाएं पढ़ीं...अपेक्षाओं की व्याख्या अपराध की तरह हुई और कामनाएं मान लीं गई नैतिक पतन की तरह...। ना तुम सच कह पाए कि व्याख्याओं से शब्द बदलते हैं, अर्थ नहीं...और ना मैं ही कह सका...हां, कामनाओं का विसर्जन नहीं होता...।

अचानक साथ आने वालों की सहयात्रा थी...। चले हैं तो कहीं पहुंचना निश्चित है...भले ही तय कुछ हो ना हो...

mnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

27 एक चुप्पे शख़्स की डायरी

वां पन्ना

खुली हवा में सांस लेना एक सपना है...सपने होते ही हैं खुली हवा...। हवा...ना बंधती...ना ठहरती...कभी इस गांव...कभी उस ठांव...सहेजने की कोशिश में खाली ही रही हथेलियां...। सिमटी हवा में जीने का अर्थ तुम कभी नहीं जान पाओगे...हवा रीत जाने का एक ही अर्थ है...घुटन...और घुटन का एक ही अर्थ है...घुटते...घुटते...अंततः घुट जाना...।

तेज हवा से फड़फड़ाते पन्नों की फड़फड़ाहट कानों से सुनाई नहीं देती...

amnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

28 वां पन्ना

एक चुप्पे शख़्स की डायरी

संबंधों के बर्फ हो जाने के बाद...काफी नहीं था ठण्ड से कांपना और हाथों को आपस में रगड़कर अपने ही ताप से सर्द मौसम को हराने की कोशिश करना...या कि रस्सियों को सहारे की तरह थामे...रपटीले रास्ते पर चढ़ते जाने की जिद पकड़े रखना...हाथ कभी भी फिसल जाते हैं...सहारे से...जिद से...। खाइयां गहरी हैं और पत्थर लुढ़काने को तैयार...। चींटियों और मकड़ी के उदाहरणों से कब तक बहलाओगे मुझे...सदियां हो गई फिसलते हुए...।

तुम संभलना जानते थे...संभल गए...

mnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वां पन्ना

कंधों पर बैठीं...कभी सिर पर सवार हुईं...कदमों में लोट-पोट हो खिलखिलाती रहीं...। खुशियां हथेलियां फैलाकर दिखाती रहीं...कि कहां-कहां छिपा है खजाना...आने के नन्हें कदमों की छाप अब छिप गई है लौटने के बालिग पैरों के निशान तले...। सीधे पैर आईं...उलटे पैर लौटना था...लौट गईं तुम्हारे साथ। खुशियों को नया ठिकाना मिला...बेदखल उदासियों को अपना घर मिल गया...।

जानता हूं मर्जी से आती हैं खुशियां...तुम्हारी मर्जी से...

amnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सवाल बेवजह थे, जवाबों को वजह ढूंढनी थी...। संवाद नहीं...सवाल-जवाब की रस्म थी...हर सवाल अपनी जेब में रखे हुए था ढेर सारे जवाब...मुझे सिर्फ सवाल के साथ उसका जोड़ तय करना था...तुम कुतूहल में थे, मैं असमंजस में...। मुझे पकड़ाए गये जवाब फर्ज की तरह तयशुदा थे, तुम्हें हक था सवाल बदल सकने का...।

तुम्हारे सवाल लापता हैं...मेरे जवाब बेपता...

mnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

31 वां पन्ना

एक चुप्पे शख़्स की डायरी

बूढ़े पीपल के नीचे छोड़ दी गई खंडित प्रतिमा को...किसी अर्चना का इंतजार नहीं...देवालय एक स्मृति भर है, जिसे छोड़ने से पहले छोड़ना पड़ा आराध्य होने का दंभ...। दुर्बल आस्थाएं मंगला आरती के बाद...प्रदक्षिणा तक आते-आते दम तोड़ गईं...नींद नहीं तोड़ते अब घड़ियाली टनके...पुजारी नहीं लेकर आते शृंगारदान...पीली पत्तियां ढंक लेती हैं खंडित अंग...अनुभव से जानता है पीपल...आरती के बाद उठा करते हैं आर्त स्वर...।

नियम से आने वाले चर्चा करना नहीं भूलते...कितनी चमकती थी उस प्रतिमा की नीलम आंखें...

amnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वां पन्ना

लिखत वह नहीं थी...जिसे माथे की लकीरों में पढ़ा तुमने इक उम्र तक...वह थी जो अनपढ़ी रही माथे पर लगभग स्थायी हो गई सलवटों के बीच...। बहस की भाषा अलग थी और निर्णयों की अलग...। तुम्हारे निर्णय को सिर्फ स्वीकारना नहीं था, अपना कहकर सजा लेना था माथे पर गर्व की तरह...। तुम नहीं जान पाए...गर्व पिघलता है तो बहुत फिसलन होती है...।

...और...उम्र को फिसलने में देर ही क्या लगती है...

mnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

33 वां पन्ना

एक चुप्पे शख़्स की डायरी

दूरियां इक बहाना हैं...कितने सारे बहाने थे...तुमसे मिलने ना आ पाने के...एक तुम हो कि हर रोज आ जाती हो...किसी भी वक्त...मिलने...बिना किसी बहाने...आसमां की दूरियां नापते हुए...। तुम अपने स्वभाव में रहती हो...मैं अपनी आदतों में...हर कोने को बुहारकर, झाड़कर धूल निकाल देने वाली मां, तुम्हारी तस्वीर से धूल झाड़ने को टालने के लिए भी बहाने ढूंढता रहा हूं मैं...।

तुम्हारे बिना जीने के बहाने तलाश रहा हूं...बहाने कितने कम हैं मां...

amnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

34 वां पन्ना

एक चुप्पे शख़्स की डायरी

बचाना जानती है मां...बचा ही लेती है हर बार...तंगी के दिनों में बचाती रही थोड़े से पैसे...मेरी जरूरतों के लिए...मेरे स्कूल से लौटने तक बचाती रही चूल्हे में आंच और कटोरी भर सब्जी को ठण्डा होने से...। शीतलासप्तमी की ठण्डी मीठी रोटियां दिनों तक...कि जब तक लौट नहीं आता मैं दफ्तर से काम से दिल्ली गया हुआ...। बचा ही लेती रही मां घर को बाजार से...पिता के गुस्से से, भाइयों की नाराजगी से और बहन की बढ़ती जा रही चुप्पी से...।बहुत जरूरी काम में फंसा होगा...चाहता तो बहुत होगा...आ नहीं पाया होगा...कहकर फिर से बचा लेती है मां...मुझे अपराधी होने से...।

बचे हुए हैं वे सब दिन...तुमने ही बचाकर रखे होंगे आले में...सब कुछ बचाना जानती हो मां...

mnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वां पन्ना

तुम्हें लगता है आसमां में दरवाजे नहीं होते...तुम्हारे कहते ही बंद हो जाते हैं दिशाओं के दसों दरवाजे...तुम्हारे उलाहनों और तानों के ताले लग जाते हैं हर ओर...झिर्रियों से झांक भर लेने से दरकने लगती हैं विश्वास की दीवारें और संदिग्ध हो जाती है छत...संधियों के कोनों पर जमे जालों में छटपटाने लगती है मकड़ियां...हर आहट...हर दस्तक पर छिप जाती है हवा...गहरी सांस में...दु:साहस यह कि झिर्रियों से झांकता है आसमां...साफ-साफ दिखाई देती है हवा भी...।

तुम्हें तालों पर भरोसा नहीं...चाबियों पर भी नहीं...

amnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

36 वां पन्ना

नींद पगडंडी है...टहलते हुए आ जाते थे तुम गांव तक...घर तक, जहां से आगे कोई रास्ता नहीं था...। पगडंडियों तक आती थी पर चली जाती थी शहर को जो सड़क...कि जिस पर आखिरी बार देखा तुम्हें...दौड़कर गए तुम...पगडंडियों को रौंदते हुए...किसी पेड़, किसी पौधे, किसी टहनी...किसी फूल ने नहीं रोका तुम्हें...सड़क अब भी आती है...जाती भी है...पगडंडी घर तक पहुंचती है अब भी...और ये कि घर से आगे...अब भी कोई रास्ता नहीं है...।

करवटें बदलने से पगडंडियां नहीं बदल जातीं...

mnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वां पन्ना

टूटे हुए का क्या हिसाब रखना...टूटते हुए टूट जाना होता है धीरे धीरे...बस। याद नहीं रहता...किस पेड़ का कौनसा पत्ता कहां गिरा...हवाओं में कहां चला गया...। बातें जो गईं थीं...तुम्हारे वादों को ढूंढने...लौटी नहीं...हर खड़खड़ाहट आने की हो...जरूरी नहीं...हवा जाते हुए भी ऐसी ही आवाज करती है...बेचैनियों के लौट जाने और उदासियों के चहलकदमी करते आने की...कोई आवाज नहीं होती...सब कुछ टूटने पर भी नहीं टूटती खामोशी...और...एक डर नहीं टूटता...टूट जाने का...सब कुछ टूट जाने के बाद भी...।

क्या अब भी सुनना चाहते हो तुम...टूटने की आवाज तुम्हें लगता है...वह होती होगी

amnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-20

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वां पन्ना

उस रूमाल पर काढ़े गए फूल के रंग धुंधले हो गए भले...अभी भी बची है उन कोनों की सिलाई...जो तुमने की...। तुम्हें सिलना आता है सब कुछ...जो जहां से उधड़ जाए...। महीन सिलाई है तुम्हारी...बरसों के बाद भी उधड़ी नहीं चुप्पी की सीवन...जाते-जाते सिल दी थी जो तुमने...। पर...रंगों को पहचानना नहीं आया तुम्हें...जरा सा गीलापन नहीं झेल पाते...।

जिसे सिलाई और कढ़ाई आती हो...उसे रंगाई भी आए...जरूरी तो नहीं

mnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

धर्मयुद्ध की तरह दिखता रहा जो...कुछ नहीं बस दिनचर्या का हिस्सा था...भीतर उबाल आता रहा और आंच बाहर कहीं से...पानी अपना कर्म नहीं भूलता और आग अपना धर्म...। अपने-अपने भीतर अपनी-अपनी लड़ाई हारने के बाद...हर हारी हुई लड़ाई धर्मयुद्ध की तरह लड़ते रहे हम...एक दूसरे के दायरों को बेधते चले जाते हुए...कोई नहीं था जो व्यूह रचने के बाद तोड़ना भी जानता...अपना भी...दूसरे का भी...और फुर्सत किसे थी...मुझे भी दफ्तर जाना था, तुम्हें भी हजार काम थे...।

किसी ने नहीं कहा...कि यह धर्मयुद्ध आखिरी विकल्प है...

amnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-20

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वां पन्ना

पकड़ के साथ ही तय हो जाता है छूटना....कि जैसे छूट गए थे आखिरी कुछ शब्द बात पूरी होने से पहले...जिन्हें मुड़ने से पहले सुन नहीं पाए तुम...सफर में छूट जाता है पीछे फालतू सामान...खाली बोतलें पानी की...कि याद नहीं रखना होता...छूटा हुआ कुछ भी...छूट ही गया था वह गमला कसकर थामे हुए हाथों से भी...कि जिसमें पहली बार उगा था लाल फूल...और वह सफेद मनकों की माला...जिसके मनके बिखर गए हाथ से छूटते ही...। फकीर की झोली में रखे सफेद पत्थर उसी माला के हैं...जिनसे तोड़ता है वह भीतर का महामौन...और छोड़ता चलता है चुप्पियां पीछे राह भर...।

पता नहीं क्या है वह जो तुम्हारे छोड़कर चले जाने बाद भी नहीं छूटा...

mnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वां पन्ना

जहां कुछ नहीं था, वहां खालीपन था...तुमने खुर्दबीन से खोजी हर जगह और उसे भर दिया शब्दों से...कि जिन्हें कंधे पर ढोया ना जा सका, वह मन ने ढोये...। राह भर रिसती रही ऊब...और ऊब...पिघलती गयी मेरी ऊंचाई...बहुत देर बाद जान सका कि कंधों पर सिर्फ सिर नहीं रखा था...जो पिघला वह मोम खाली जगहों से आया...जहां रख दिए थे तुमने कुछ सुंदर शब्द...बड़े करीने से...मैं ही नहीं समझा...तुमने तो बताया था...बहुत नाजुक हैं, हर आंच से बचाकर रखना...।

ठंडे शब्द...जमने में बरस लगे...पिघलने में पल...

amnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-20

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

42 वां पन्ना

एक चुप्पे एकरूप की डायरी

हथेलियों में रेखाओं के घर बनाकर, आदत की तरह ठहर गया है स्पर्श...आदतें जाती कहां हैं...कि जिसे भूल कहकर समझा लेता हूं खुद को, आदत है, आते जाते झांक लेता हूं उस आले में...जहां अब कोई चिट्ठी नहीं होती...पड़े हैं कुछ चमकीले विज्ञापनों वाले ब्रोशर...कुछ घटिया छपाई वाले परचे...। विज्ञापन इरादतन पैदा किया गया भ्रम है...भ्रमों से मुक्ति नहीं होती, उम्र गुज़र जाने के बाद भी...। ...भ्रमों से मुक्ति बस एक भ्रम से ज्यादा कुछ नहीं...। टंगी हैं आदतें खूंटियों पर, दुपट्टे के साथ...मैली होती हुईं...कि बरसों से नहीं धोया गया...मैला हो गया है...पर सिर्फ दुपट्टा...उसमें अटका स्पर्श नहीं...।

जाते हुए...आदतवश ही सही मुड़कर देख लिया होता...

mnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

लौटना होता है हर रोज...कोई कितना दूर जाए...कितना चले। रास्ते होते ही कितने हैं आगे चलते जाने के...। जाता तो वह है जो जाते हुए पीछे सब दरवाजे बंद कर जाए...जब भी गया मैं...विकल्प की कोई खिड़की खुली छूट गई...झोल खाकर मुड़ती समझौते की सड़क से शर्मिंदा होकर लौटा और जरा सा पल्ला सरकाया...कूद गया भीतर उसी खिड़की से...वापस वहीं, जहां से रोज शुरू करता हूं खुद से भागना...। लौटता तो तब भी, अगर तुम लौटने को कहते...तुम्हारे लिए लौटता तो दरवाजे से चलकर आता...गर्व से घंटी बजाकर...। हर कहीं से...तुम्हारे लिए लौटता हर रोज...एक बार लौट तो आए होते तुम...मुझे लौटा ले जाने के लिए...।

लौटना अंत नहीं...नई यात्रा की शुरुआत भर है...

amnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-20

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

44 वां पन्ना

लहूलुहान जिद दम तोड़ देती...हमने बचा लिया...। हाथ छुड़ाने की कोशिश में छिलते-छिलते कितना छिल गई...थामे तुमने भी रखा...मैंने भी...हम जानते थे, एक तरफ से हाथ छूटेगा तो दूसरी ही तरफ गिरेगी...। तीखे कोनों से छीला तुमने...खुरदरी सतह पर रेतता रहा मैं...। अपनी अपनी शक्ल देने की कोशिश में बेशक्ल हो गई...उसे याद तक ना रही अपनी पहली सूरत...। तय तो तुम भी करके आए थे, मिलकर तय करने से पहले...मेरे पास भी आखिरी पन्ना था समझौते की फाइल का...जिस पर तुम्हें बस दस्तखत करने थे...।

तयशुदा तरीके से कुछ भी तय ना हो सका...

mnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वां पन्ना

बे-रंग से बदरंग होने तक...जितने रंग देखे, उससे दो ज्यादा जी लिए...। रंग हवा में थे, रंग पानी में थे...रंग हथेलियों में थे...रंग सपनों में थे...पक्के रंग...इतने कि खारे पानी से धुलकर भी रंग नहीं खोया...। समझ आते आते ही आई कि रंगों से खेलना सिर्फ शौक नहीं होता...। रंग छूटते नहीं, पर बदलते क्या देर लगती है...। दूर हवा में उड़ते रहे रंग...दिखते रहे सब के सब चेहरे पर...। जिस रंग में रंग गए थे तुम...उसी रंग में हूं...उतरता नहीं तुम्हारा रंग...होलियां आती रहीं...होलियां जाती रहीं...।

रंगों को मिलाने का अनुपात हमेशा गड़बड़ जाता है मेरा...

amnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-20

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वां पन्ना

ठहर जाने से खत्म नहीं हो जाते रास्ते...थक कदम गए...रास्ते नहीं। हर छूटते मील के पत्थर को देखना...खुद को दिलासा देना है और सामने पड़े रास्ते को देखना बस एक उम्मीद...। पत्थर चले कहां तक की सूचना है, कितना बाकी है इसे नहीं पता...यह संशय भी साथ यात्रा करता है...पहुंचेंगे वहीं, जहां से चले थे...धरती अपनी परिधि नहीं छोड़ती और रेखाएं कितनी भी खींचो, तुम्हारी कल्पना से ज्यादा कुछ नहीं...। गोले से बाहर नहीं जाती सोच...धरती पर चौखाने से खींच देने से धरती चौकोर नहीं हो जाती...।

कदम चलने नहीं देते...रास्ते रुकने नहीं देते...इस तरह जारी है सफर...

mnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वां पन्ना

हाथ में वही था जो जाता हुआ कल थमा गया...। जो आया नहीं वह हाथ में नहीं...उसे कहता कैसे...। जो है कि वह तब तक फिसलता है...जब तक चला ना जाए...। क्या कमाल है जो चला जाता है...अपने पास रह जाता है...सदा को...। ताजमहल के सामने बैठकर भी बोला जा सकता है मासूम सा झूठ...यह जाने से पहले समझ आ नहीं सकता था...ठंडे सफेद पत्थर पर हाथों की छुअन सिर्फ प्रेमगीत नहीं लिखती...।

ताजमहल पर किसने पढ़ा मुमताज का मर्सिया...मुझे नहीं पता...

amnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-20

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ब्याज सहित लौटानी होती हैं सहानुभूतियां...। दिलासे किसी के सगे नहीं होते...। खुद को लगातार ठगने और अंतहीन झूठ से गुजरने के बाद...कंधे से कंधा रगड़कर निकली सच्चाइयां...। ढोना और ढोते चले जाना...बरसात भरे दिन में सिर पर रूई की ढेरी लेकर निकलना है...निकला...। जीने के सपने अच्छे थे...खिली धूप में रूई के फाहों से...। मौसम में तुम्हारी साजिश ना सही...संगत जरूर थी...बादलों को देखकर तुम्हारा खुशी से चहक उठना अब समझ आया...।

बादल..उमस और घुटन भरे दिन में ही बरसते हैं, इसमें कुछ नया नहीं...

mnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उलाहने घड़ ही लेते हैं बहाने...। तुम्हारी दी सामान की परची में एक एक कर खरीदा गया सामान, जो जहां था, जैसा था और जितनी मिकदार में था...। उन बड़ी दुकानों पर...लम्हों की खरीदारी नहीं हो सकती थी ऐसी...तुम्हें यकीन कैसे दिलाता...जो सांस लेता है...वह जिंदा भी हो सकता है...। लम्हे सांस लेते हैं.....परची में तीसरे या चौथे नंबर पर लिखे सामान में उनका नाम नहीं था...। उलाहने परची पलट कर लिखे गए थे...जहां बाकी जगह खाली थी, नए बहानों के लिए...नए उलाहनों के लिए...।

शिकायतें तो और भी होंगी...बाकी की परचियां खो देने का तुम्हारा उलाहना...इसी परची पर लिखा था...

amnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-20

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

50 वां पन्ना

बहुत...बहुत था सब...बहुत सी बातें...बहुत से किस्से...बहुत सी हंसी...बहुत से ठहाके...बहुत सारे लाल फूल...बहुत से पत्ते जो उस पार्क के कोने में ढेर बना बनाकर देखते रहते थे...जहां बहुत हरी थी घास...। बहुत सारे दिन तक...बहुत सारी शामें थीं...बहुत सारी रोशनी...। सड़कें भी बहुत थीं...जिन पर चलने का इरादा भी बहुत...बहुत कुछ था और बहुत कुछ जो नहीं था...हम खोज लेते रहे उसी में...। जो नहीं था उसे खोज भी लेते...बहुत सारा रास्ता तय करने के बाद अगर थोड़ा सा और चल लिए होते...। यकीन करो...बहुत सारा चलने के बाद...थोड़ा सा और चलने से बहुत फर्क पड़ जाता है...सच...।

बहुत सारे में से जो कम हुआ है...वह कम नहीं बहुत है...

mnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

झुण्ड में चलती हैं बेचैनियां...अकेले में बेचैनी होती है शायद इसलिए...। जेब में भरकर बादल...हाथ नमी तलाशते हुए बेचैन ताकते हैं आसमां को...। दो तारों के बीच जगमगाहट सही...खाली जगह भी तो है...रात की बेचैनी इस खालीपन की बेचैनी है...। कुछ ना होने पर कुछ हो जाने की आशंका बादल के पहाड़ से टकराने सी है...चोट टखने में भी लगे तो दर्द की लहर माथे तक आती है...दर्द बस एक अवसाद है...दूसरे दर्द को ढूंढता हुआ...अकेला...बेचैन...।

तुम्हें याद होगा, जब उस दिन घुटने छिल गए थे, जरा सी ठोकर खाकर...

amnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-20

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

52 वां पन्ना

तुम्हें याद है...कितनी नमी थी फूलों में...पत्तियों पर भी जमी रहती थी ओस...हर सुबह...। रात है ही क्या...इंतजार का काला समय...। हर सुबह क्यारियों में गुड़ाई करते हुए...बार-बार छूकर देखी...रात भर भीगती रही सीली मिट्टी...बरसों हथेलियों में सहेज कर रखी ओस की वह बूंद जो तुमने उठाकर रख दी थी हाथ पर...। उसी ओस में भीगता रहा तुम्हारे नाम का पहला अक्षर...जो तुमने लिख दिया था, स्याही वाले पेन से....और पता है, तब से कभी खोली नहीं हथेली...किसी के सामने...।

हथेली पर रेखाएं बांचने की नहीं, खींचने की जरूरत थी...

mnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वां पन्ना

छू जाना...छू भर लेना नहीं है...छुअन छू जाती है सब कुछ...। वे दिन जो छूट गए कि जिन्हें भाग भागकर छू ना सकें...एक छुअन भर से छुए जाते हैं...कि जैसे विष-अमृत के खेल में तुम मुस्करा देते हो अमृत कहकर...और इस तरह जाने क्या क्या अमर हो गया...जो कभी मरेगा नहीं अब...। पलों के अहसास सदियों तक अहसानमंद रहेंगे...। जाने इस खेल में विष किसके हिस्से आया...अमृत का इंतजार इतना लंबा क्यूं है...तुम्हारे छू भर जाने से सब खेल बदल गया...। इस ख्याल में विष भी है, अमृत भी...हां यह खेल नहीं है, जानता हूं बस...।

हथेलियां नम ना होती तो समंदर यकीन कैसे दिलाता कि कोई लहर थी यहां...

mnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

54 एक बुरे शख्स की डायरी

वां पन्ना

सांस अधूरी थी...नाम पूरा...टुकड़ों-टुकड़ों में आया जुबान तक...। कांपते हुए होंठों से...जाने कितने ही टुकड़े बिखरे फर्श पर...जिन पर चिपका रह गया सांस का कोई कतरा...या...जुबान की नमी...। अधूरे अहसासों का भी पूरा नाम होता है...तुम्हारे पुकारने से जाना...। अपने ही चेहरे पर थिरकता पाया अपना नाम कि....जैसे पहली बार सुना...इस तरह अपने होने को कोई नाम मिला...। तुम्हारे नाम से ही जानता रहा खुद को...नहीं जान पाया भले तुम्हारा नाम...कितने नाम दिए तुम्हें...और अपने नाम से परे किसी नाम में जी लेना...गवारा नहीं तुम्हें...।

घुट जाती है सांस भले...बचा लेती है हर बार तुम्हारे नाम के शब्द...टूटने से...

mnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वां पन्ना

बंद खिड़की जितनी उम्मीद है...उतनी ही आशंका...। जाने हवा के आने जाने को रास्ता भर देती है कि खुशबुओं से परदे हटाती है...। दुतल्ले मकान की खिड़की अब बरसों से बंद है...आधे टूट गए कांच की किरचें उतने ही रंग लिए थी, कि खिड़की का खुलना इंद्रधनुष की आमद थी...। खिड़की खुलने का इंतजार गली में सन्नाटे के साथ खड़ा रहता था बतियाते हुए...पहले कौन टूटता...जाने सन्नाटा जीतता कि इंतजार...बहस कभी खत्म नहीं हुई...। इक्का-दुक्का साईकिल, रिक्शा वाले आ ही जाते थे...पैडल और पहियों की घर्र घर्र से सन्नाटा चीरते हुए...। और कोई खड़ा भी रहता था घंटों खिड़की खुलने के इंतजार में...इंतजार अब घंटों से बरसों तक फैल गया...बहस जारी है...।

मुझे सिर्फ अपने इंतजार की इन्तिहा देखनी थी...जो अब तक नहीं हुई...

mnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

56 वां पन्ना

गली नापते कदमों के निशान उम्र पर छपे...उम्र ढलान पर फिसलती गई.... निशान पुंछ गए होंगे उस ढलान पर से तो...जहां से साथ फिसले थे अदीख ऊंचाइयों को छूने की कोशिश में...। ऊंचाई जो भी हो, ढलान सच्ची है हमेशा...जहां भी लाई, वहीं जमीन दिखी...। बहस के ऊंचे स्वर जहां खत्म हुए, वहां तुम्हारा प्रेम किसी पदार्थ में गुम था...प्रेम के पदार्थ होते चले जाने का सफर, अकेले ही तय करना होता है...ढलान पर रपटते हुए, जो थाम सकते थे, उसकी उम्र ही कितनी हो सकती है...एक अंतराल भर, एक इंतजार भर...या तो रपट जाना, या थाम लिया जाना...।

ढलान पर छटपटाते हुए फिसलने और चुपचाप फिसलते चले जाने के विकल्प हमेशा खुले रहते हैं...

mnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वां पन्ना

तुम्हें याद है, वह कल, जो आना था...आज से पहले...। भूल जाने पर भी आया तो होगा...वहीं रखा होगा, उसी आले में...बीते हुए कल भला जाते कहां हैं...उनकी सांस सुनती है...उनकी सांस दिखती है...कल तक कहना टालने पर भी वह आज से शुरू हो गया...साथ रहने से साथ होना नहीं होता...साथ होने को साथ रहना जरूरी नहीं...कि जैसे कल जो साथ नहीं रहता...उसकी सांस में जिस कल का सपना है, वह पता नहीं आएगा कि आकर चला गया...देखना तुम्हारे साथ है क्या कहीं, छूटा हुआ कल...जो आना था आज से पहले...।

आज का क्या है, चला जाएगा...कल तो रहेगा यहीं...

mnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

58 वां पन्ना

एक जगह से उठाकर लम्हों को दूसरी जगह रख देना, जरा सी बात नहीं...जरा सा क्रम बदल देने से सब बदल सकता था...बस इतना सा तो करना था...जो पहले किया...बाद में सोचा...जो बाद में सोचा उसे कर ना सके...पहले से बाद तक सब बदल गया इसके बाद...। सोचते हुए करना और करते हुए सोचना, सब वहम था हमारा...जो सोचा गया, वह किया न गया...जो किया गया, उसे सोचने के अलावा कोई विकल्प नहीं...बहुत सोचने के बाद भी नहीं मिला कोई रास्ता...। मुझे नहीं पता तुम क्या सोचते हो...तुम्हें नहीं पता मैं क्या करता हूं...करते-करते किस मोड़ पे आ गए हम...यहां तक आना...क्या सोचा था कभी...तुमने...या मैंने...रहने दो, अब सोचने से क्या होगा...।

mnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वां पन्ना

अहसान का भुगतान तय है...सांसें अहसान सी आईं, उम्र भुगतान में दे दी...। जाते जाते...बिना आवाज दिए ही चौंककर पलटना तुम्हारा, कुछ याद आना नहीं था, कुछ याद दिलाना भर था...बकाया छोड़कर जा रहे थे तुम...जो था तुम्हारा था, जो मिला, जो शेष रहा, जो मिलने की उम्मीद रही...तुम्हारे और तुम्हारे का...एक बड़ा सा ढेर...जिसमें कुछ भी नहीं दिखता, बहुत कुछ होने के बावजूद...मैं कहीं नहीं था वहां...तुम थे, बातें थीं, अहसान थे...तुम्हें याद होगा सब...तुम्हें सब हिसाब रखना है...मुझे भुगतान करना है...पहली किश्त में लौटा रहा हूं उम्मीदें...।

तेरा तुझको अर्पण...क्या लागे मेरा...

mnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वां पन्ना

तुम तो कहते थे काग़ज़ के फूलों में खुशबू नहीं होती...फिर ये कार्ड अब तक कैसे महकता है...बरसों बाद भी...वह साल जो तब नया शुरू हो रहा था...अब भी नया नया सा है, पुराने दिन कितने नए रहते हैं...कैलेण्डर पर कैलेण्डर बदलने के बाद भी...तुम्हारे लिखे ढाई-तीन शब्दों की स्याही अब भी गीली क्यूं है...हां धुंधवा गई है मेरी नज़र कुछ...या तस्वीर नम हो गई कि साफ नहीं दिखती अब...। अब भी उस लिफाफे पर... डाकखाने की मुहर में तारीख नहीं बदली...अब भी खत पर वही पता है ज़िंदगी का...जहां अब कोई नहीं रहता...।

बरसों से डाकखाने आता हूं रोज पूछने...जिस खत में तुम्हारा आना लिखा था...वह गया कहां...

mnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वां पन्ना

समझ आते आते ही आया तुम्हारा प्रेम...। परिंदों से प्रेम करते हुए पिंजरे खरीद लाए...हिरण जंगल से बाड़े में आ गए...। प्रेम कहते रहे और बनाते रहे मकान का नक्शा...कि जिसमें लोग दो रहें पर कमरे तीन हों...। हर खुली जगह जमीन की बरबादी की तरह देखी जाती रही...अभियंताई बहस तब तक चली...कि जब तक तय ना हो गया घर को मकान में समेट देना...इस बीच जब तक तुम कमरों के आकार नापने को फीता ढूंढते रहे...मैं नक्शे में वे जगहें ढूंढता रहा, जहां खिड़कियां हो सकती थीं...।

मकान की नींव में दबते-दबते दब गया घर...

mnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2

Digitized by Dr. Mukesh Kumar Gupta Centre for Research in Educational Heritage Bantalab Jammu

62 वां पन्ना

चमक और कीमत का बाजार पता था तुम्हें...धारदार शिकायतों से, तीखे शब्दों से तराशा बहुत...हीरा नहीं था मैं...नुकीले पलों से बींधा बहुत...पिरोया ना जा सका...मोती नहीं था मैं...।मिट्टी का था...मिट्टी था बस...जरा सी नमी देकर थपथपाया होता हाथों से...आकार ले लेता, जो तुम चाहते...। तुम्हें भरोसा था अपनी छैनियों...हथौड़ियों पर...मुझे ढलना सिर्फ नमी में था...मिट्टी हूं, कटता भी तो पानी से ही कटता...।

पत्थर सांचे में नहीं ढलते...मिट्टी को तराशना तुम्हें नहीं आया...

Digitized by Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS MoE-2

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वह कहानी...जिसे तुम सुनते-सुनते सो गए थे...मैं कहते-कहते...अब भी वहीं ठहरी है, उसी मोड़ पर...जहां से उसे आगे का रास्ता खुद चुनना था...। जितनी भी बार दोहराई, शब्द बदल गए, अर्थ जो था, वही रहा, वहीं रहा...। तुम्हें शब्दों में अर्थ तलाशना था...मुझे तुम्हारे अर्थ को शब्द देने थे बस...। हर संवाद एक आरोप की तरह आया और अगले संवाद का रास्ता रोककर खड़ा हो गया...। मैं चाहकर भी इस कहानी की शुरुआत नहीं बदल सकता था...तुम चाहते तो इसका अंत बदल सकते थे...।

इस कहानी के किस्से...चौपालों में सुने गए...

mnigam Digital Preservation Foundation.Chandigarh.Funding by IKS-MoE-20

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

64 वां पन्ना

लौट आने की गुज़ारिश खारिज़ कर देना हक था तुम्हारा...। खारिज़ करना जरूरी है सब गैरजरूरी चीजों को...। लो मैं...उन लफ्जों को खारिज़ करता हूं जो तुमने जाते हुए कहे...जिन रास्तों से गए तुम, उन रास्तों का खारिज़ करता हूं...जिन पेड़ों के नीचे खड़े होकर हुई हमारी बात उन पेड़ों को खारिज़ किया...हवा के उन तेज झोंकों को खारिज़ किया जिसमें आखिरी बार बस इक दुपट्टा हिलता नज़र आया...वे तर्क खारिज़, वे सवाल खारिज़, वे अधूरे जवाब खारिज़, वह लम्हा, वह पल, वह घड़ी खारिज़....लो मैंने निकाल बाहर किया वह दिन ज़िंदगी से...अब चाहो तो लौट सकते हो तुम...।

उन दिनों को नजरअंदाज कर दो, जो खारिज़ किए जाने के डर से कहीं जा छिपे...

mnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वां पन्ना

रिश्ते अफसोस से भी बुने जाते हैं...। तुम्हें अफसोस रहा हर बात का...मुझे अफसोस रहा कि तुम्हारे अफसोस में मेरा साझा न था...। तुम्हें अफसोस रहा...खूबसूरत चमकीली किरणें चादर में नहीं बुनी जा सकीं...नहीं हो सका चांदनी रात में नौका विहार...हवाओं में जिस खुशबू को बोया, वह पेड़ नहीं बनी...तेज रहा पानी उस नदी का जिसमें पैर डुबोकर किनारे बैठने का सपना देखते रहे हम...पहाड़ों पर भी बर्फ पिघल गई...जिन रास्तों से गुज़रे उन पर हजारों राहगीरों ने मिटा दिए हमारे कदमों के निशान...अफसोस रहा तुम्हें कि धरती पर वे लकीरें मिट गईं जिन्हें बनाया था तुमने चौसर की तरह खेलने को...खेल अफसोस में खत्म हुआ...।

अफसोस बेवजह भी हुआ...जिनकी वजहें बाद में ढूंढीं जाती रहीं...

mnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

66 वां पन्ना

एक चुप्पे शख़्स की डायरी

प्रेम नींद भर था...नींद में सपने थे...सपनों में ज़िंदगी...। आंख बंद थी और दुनिया ओझल...कोई हलचल नहीं थी सपनों के सिवा कहीं...सपनों में सब कुछ था...तुम थे, दुनिया थी और दुनिया से बेपरवाही थी...तेज रोशनी में भी खुली रह सकती थी वहां आंखें...बिना किसी को देखे भी...। पलकों के किवाड़ों ने बाहर की आवाजों को रोके रखा...बाहर ही...सबेरा होने तक...। चिड़ियों की चहचहाहट... सुनहरी किरणों वाली चमकीली सुबह तुम्हारे स्वागत को इंतजार में थी...तुम जाग गए...तुम्हें दिखने लगी दुनिया...सुनने लगी सब आवाजें...मैं उनींदा हूं अभी...मुझे सोने दो...।

नींद अंधेरे की साथी है...तुम्हें सुबह का सूरज देखना था...

mnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वां पन्ना

चलने से पहले जानते थे हम...थक जाना हार जाना नहीं है...थकना हक है हर चलने वाले का...जिसे हार की तरह देखते रहे...। छोटी-छोटी हार बड़ा थकाती है...छोटी छोटी थकान बड़ी हार के लिए तैयार करती रही ज़मीन...। चलने से नहीं...तुम्हारी थकान से हारा जब भी हारा...मेरी हार से थके तुम जब भी थके...अपने अपने हक में जिये हम...थककर...हारकर...। यूं तो सफर था ही कितना...कुल दो पल का...एक पल को देखने भर से शुरू हुआ...एक पल पर आकर ठहर गया...।

एक पल थकान में बिताया...दूसरे में हार गए...

mnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

68 वां पन्ना

एक चुप्पे शख़्स की डायरी

उड़ान भरोसे की थी...भरोसा अनुमान पर टिका था...एक दूजे के अनुमान पर उड़ते रहे हम...। अनुमानों से पसरती हुई उड़ान दिशाएं भूल गई तो भूल गई...आसमां में दिशासूचक बोर्ड नहीं होते और ना ही दूरियां बताने वाले मील पत्थर...। प्याज के छिलकों सी जाने कितनी परतें हैं आसमान की...हर परत खोलने के बाद दावा किया जी लेने का... अनुमान से कहां जिया जाता है सच को...भूगोल की व्याख्याओं से परे उड़ान जितनी सच थी, आसमां एक अनुमान से ज्यादा कुछ नहीं...नीला रंग खोता गया, ऊंचा उठते जाने के साथ साथ...हवाएं कम होती गईं...और जहां से हमने देखा उसे...वहां इस खूबसूरत आसमान में दम घुटता था...।

तुम्हें अफसोस रहा कि आसमां नहीं छू सके...मुझे पछतावा कि जमीं छोड़ दी

mnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वां पन्ना

अधूरापन पूरी उम्र लेकर आता है...आधा तो पूरा आधा है... आधे तक चले रास्तों में...पूरा सफर था...कदमों में जो बाकी रहा, वह अधूरा रहा...मैंने ही अधूरा समझा...तुम्हारे बात को...पूरी थी...आधे शब्दों में...।जवाब पूरा था, सवाल अधूरे रहे तो रहे...। मुस्कान जो होंठों तक आधे आकर शब्दों में बदल गई...आधे चबाए शब्द...अधबीच रह गए...हां और ना के...। ...शब्द हैं ही क्या...सांसों के अनुभव को उतार चढ़ाव के साथ आकार देना बस...सांस तो बहकती भी है, बहल भी जाती है...प्राथमिकताएं तय करनी होती हैं..कि आधी अटकी सांस में शब्द बोलें कि सांस पूरी करें...भीगे हुए शब्द अच्छे थे...पर नमी से होकर गुजरती सांसें भी नम हों, जरूरी नहीं...।

हवा में आधा हिस्सा...आधा पानी में...आधी कही हर बात अधूरी रह गई...

mnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-20

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वां पन्ना

तुम चाहो तो खाते रख सकते हो...मिलान हो न हो, सब मदें अपनी अपनी जगह तो जमाई ही जा सकती हैं...खोने के खाने अलग...पाने के अलग...। खोने-पाने के बाद जो शेष रहे उसे जीवन की कमाई कहकर संतुष्ट होने का बहाना तलाशा जा सकता है...हर हिसाब एक बहाना है, सब कुछ समझ में आ जाने के वहम जैसा...। तुमने मुझे पाकर भी नहीं पाया...मैंने खोकर भी नहीं खोया...अपना अपना हिसाब है, गणित के एक जैसे सूत्र लगाने के बाद निकाला गया अलग अलग जवाब...। तुम्हारे हिसाब की किताब में मैं एक मद की जगह पर था...तुमने मुझे खोया...तुमने मुझे पाया...मेरा क्या, बस खोया जाता रहा...पाया जाता रहा...।

तुम अपने हिसाब की किताब कहां रखते हो...जान नहीं पाया...

mnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेरी चुप्पी तुम्हारे तर्क की काट ना सही...जवाब तो है...। तर्कों से चल सकता जीवन तो जीने का तर्क भी समझ आ गया होता...तर्क के बीज जहां भी गिरे...बहस उगी...हहराते जंगल में भटक जाते रहे शब्द...जो कहा वह तुम तक पहुंचता कैसे...तुमने जो कहा, उसे मुझ तक आने का रास्ता नहीं मिला...पगडंडियां बनाने की कोशिश में वे जहां वे गए...वहां रास्ते नहीं थे...जंगल था, काट खाने को दौड़ते वहम थे...दिशा भटकाने को डराती आवाजें थीं बस...आवाज़ को आवाज़ से नहीं पकड़ा जाता...आवाज़ों का पीछा करने वाले जंगल में भटक जाते हैं, जानता हूं मैं...चुप हूं कि शायद चुप कोई पगडंडी हो...तुम तक पहुंचने वाली...।

शोर में कहां लौटती हैं धीमी आवाज़ें...चुप की ज़मीन शायद शोर और तुम्हें...लौट आएं...

mnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-20

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

72

एक चुप्पे शख़्स की डायरी

वां पन्ना

बरसों कोने में पड़ा रहा रद्द किए जाते रहे भारी भारी वादों का गट्ठर...जब भी उठाया तुमने...दर्द से कराहे...। मुश्किल है एक-एक वादे का हिसाब...एक-एक हिसाब का जवाब... मुश्किल है वादों के गट्ठर को बिखर जाने से बचाना...भार उठाने के लिए जरूरी है झुक जाना...और झुक जाने के लिए...सिर का झुक जाना काफी नहीं...हर बार मेरी ओर धकेलते हुए इसे...परेशान हुए...तब पुकारा तुमने...। तुम्हें पता है मैं तो उठा ही लेता हूं भार...कितनी ही बार परखने से जान गए थे तुम...तुम नहीं जान पाए लेकिन कभी कि भार उठाते हुए जीना सांसों पर नियंत्रण की कला भर नहीं है... हवा भारी हो तो सांस पहाड़ हो जाती है और ज़मीन सपना...।

लो खुशबू भरे हल्के-फुल्के दिन तुम्हारे...भारी दिन मुझे दे दो...उन्हें लंबा अरसा है...

mnigarh Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

73 एक पुराने सन्दूक की तलाश

वां पन्ना

तुमने मुस्कुराहटें लिखीं हथेलियों पर...मैंने खुशबुएं पढ़ीं...। हरियाली सिर्फपेड़ों पर नहीं थी और लाली सिर्फ फूलों में नहीं...।हवाओं में जो बार-बार पढ़ा गया...वह संदेश वहीं कहीं उड़ता रहा तितलियों के साथ...पंखों पर लिखी आड़ी तिरछी इबारत में कोई प्रेम-कविता रही होगी...जिसका भावार्थ किसी को समझाना नहीं होता...। पुराना संदूक खोलने भर से हुई महक किसी को समझ नहीं आई...समझ तो यह भी नहीं आया कि ...जबकि...हवाएं चुप हैं तो यह शोर किसका है अब तक...जो सांय-सांय गूंज रहा है...हर तरफ।

एक फटी सी किताब के पन्नों के बीच दबी मिली तितली...पता नहीं तुम्हारा इकलौता खत कहां रख दिया...था तो यहीं, पुराने संदूक में...

mnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi Funding by IKS-MoE-2 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

74 एक चुप्पे गलियारे की डायरी

वां पन्ना

सुबह होने से पहले सपने को खाली कर जाना होता है घर...। रात के सन्नाटे में अकेली बहती रही अलकनंदा...लहरों की सांस उठती और गिरती हुई...पत्थरों को गढ़कर शिव बनाती नदी पहाड़ को जटा समझ उतरी थी...अपना अर्थ सौंपने के बाद शब्द को घिसता रहा पानी...पहाड़ की आंख का सपना है नदी...सुबह होने तक पहाड़ से बह जाना था उसे...जहां उसके लिए तय कर दिये गए थे घाट...इकट्ठी कर ली गई थी पूजा की सामग्री और अराधना को चिनवा गए थे गोल मंदिर...जिनकी परिक्रमा करते हुए तुम नदी को बार बार छूते रहे...नदी जो मंदिर की परिक्रमा में नहीं...घाट के बंधनों से जूझ रही थी...।

जिसे बांधा, उसे पूजा...जिसे पूजते हो...बांध लेते हो...

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi Funding by IKS-MoE-2 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

Gandhi Memorial College Education Talab Jammu

75 वां पन्ना

मन की भाषा बोलती है देह...। स्पर्श भरता है वे खाली जगहें जो मन छोड़ देता है अधूरे शब्दों में...।...तुम्हारी आंखों को पढ़ नहीं पाया...तेज चमक थी वहां...जो कहना था, उसे छिपाती हुई...तुम हर बार आईने के सामने से लौट आते रहे, चमक को सामने की चमक से देखना नहीं होता...माथे पर पहाड़ी सुबह का सूरज लेकर...बादलों से खेलते रहे तुम...हवाओं ने लटों को बेपरवाह किया और मन को सचेत...वह जो लरज़ थी होठों पर...उसे मैंने केवल शब्द दिए...देह का स्पर्श मन तक ना पहुंचे तो खंडित होता है प्रेम...मन का स्पर्श देह तक आए, जरूरी नहीं...वह जो देह और मन का अंतराल था...वहां बहता था पिघला दर्द...।

तुमने जिसे झरना कहा...पहाड़ों को चीरकर बहता दिखा जो...वह सिर्फ पानी नहीं था...

mnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वां पन्ना

मान लेने की ही तो बात है...किसी भी शब्द का कोई अर्थ कभी था ही नहीं...जो मान लिया, हो गया...। जिसे प्रेम कहते हैं उसे छल कहा होता भाषा बनाने वालों ने तो प्रेम छल ही होता...गाली कह देते तो गाली...। कुछ भी तो नहीं किया तुमने...बस भाषा को नए सिरे से सिखाया...अपने अर्थ दिए...जो माना...वही माना...अर्थहीन शब्द ढोए भी कब तक जाते हैं, कभी किसी अर्थ तक आकर उतार ही देना होता है उन्हें पीठ से...। थके हुए राही को जो पहला पेड़ दिखता है, रुकना वहीं होता है...तुमसे कैसे कहता कि अभी शब्दों को और खोदो, मीठा पानी है वहां...जो गीली रेत है, उसके लिए नहीं कहा था मैंने कुआं शब्द...।

होता होगा कुआं इससे भी गहरा...तुम्हारे मानने को कोई चुनौती नहीं...मान लिया...तो मान लिया...

mnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वां पन्ना

तिलिस्म न अंधेरा है न उजाला...तिलिस्म रचता है अंधेरे और उजाले का मिल जाना...अच्छा लगता होगा...रोशनी की किरणों में नहाते संसार के आभासी सच देखना...वे इमारतें जिन्हें देखकर तुम मुंह बिसूरते थे दिन में...रात की रोशनी में सपने बिखेरती होंगी...अच्छा लगता होगा तेज दौड़ती गाड़ियों के बीच...अपनी गति को नापना...यह दौड़ कहां खत्म होगी, दौड़ने वाले नहीं, रास्ते जानते हैं...बस बदलने भर को बदलना था कुछ...ठहरे हुए समय से विद्रोह के नाम पर जो बदला...बदल गया...वरना मद्धम सी बहती हवा को सांसों में भरते हुए, खुशबू भरी सुबह में जंगल में मेरे साथ टहलना इतना बुरा तो नहीं था...।

जो बदला, बदल गया...बदले हुए को न तुम बदल सकते हो...ना मैं...

mnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-20

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

78 वां पन्ना

तुमने लम्हे दिये, दिन लिखने को...। दिन थे...लिख लेता...कि जी लेता...।लम्हा-लम्हा खाली होते गए दिन...भर आया मन...खाली-खाली दिनों को भरने...। सोचा एक खुशनुमा दिन लिखूंगा तुम्हारे लिए...लिखने भर से लौट सके अगर...वह दिन...। लो मैंने लिखा...रंग...चमकीले दिनों के नाम...सुगंध...महकते दिनों के लिए...नदियां... बहते हुए समय के साथ...पहाड़...हमेशा बने रहने के लिए...पेड़ लिखा...वही पेड़...जिसकी छाया में पले सपने... सपना लिखा...पंछी लिख...पंख फैलाकर उड़ते हुए तुम तक पहुंच जाने का...तुम्हें बस आसमान लिखना था...लिख देते तो...हम उड़ पाते...।

लम्हों में लिखा प्रेम...दिनों में उम्र...बाकी समय अब सदियों में लिखा जाएगा...

amnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-20

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जिन बेढब सांकलों को देखकर हंसा जा सकता है...उन्हीं में बंधकर रोया भी जा सकता है...फर्क इधर होने या उधर होने का है बस...। हंस मैं भी सकता था तुम्हारे साथ, अगर उधर होता...। जिस आग में पिघलती हैं सांकलें, उसी में लोहा गलाकर बनती भी हैं...। पिघले लोहे का ताप पत्थर ही झेल सकता है, जो पत्थर हुआ तो क्या हुआ...। आग खौलते पानी से भी गरम होती है...पानी आखिर पानी है, यह समझाऊं भी तो तुम्हें कैसे समझ आएगा...। गरम पानी के छींटों से जल गए तुम...मैंने हथेली पर अंगार रख लिए...छाले उभर आए...हर अग्निपरीक्षा में...खरा ही उतर पाऊं...दावा नहीं है मेरा...।

जो मैं ना कहता अपनी व्यथा...तुमको हंसने की वजह कौन देता...

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

80 एक पुराने शायर की डायरी

वां पन्ना

गुनाह भीतर होता है बाहर से पहले...होने से पहले जुटा लेता है बेगुनाही के सबूत...।गुनाह जो हो ना सका, सोचा गया, हो ही गया...। सबूत गुनाह के भी बहुत थे, बेगुनाही के भी...बेगुनाही के सबूत हमेशा कच्चे होते हैं...कुछ छिपा लिए...कुछ दिखा दिए...। बुरा वक्त सजा का नहीं, बुरा है फैसले के इंतजार का वक्त...अपने गुनाह से डरता रहा...तुम्हारी बेगुनाही से भी...तुम बेगुनाह थे, चीख तो सकते थे...मैं गुनाहगार...चुप न रहता तो क्या करता...तकदीरों और तदबीरों का खेल खत्म होने के बाद, तुम्हें हो तो हो...मुझे किसी फैसले का इंतजार नहीं...।

तुम्हारी अदालत में कटघरे में हूं...मुन्सिफ होते तो होते तुम भी यहीं...

amnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-20

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

81 वां पन्ना

तुम्हें याद है...जब पंखों पर भरोसा नहीं था पर उड़ान पर था...जमीं बनकर बिछे रहने की एक उम्र के बाद आसमां ने हथेली खोल दी...कहा ले जाओ, यह उड़ान तुम्हारी...यह हवाओं के घर तुम्हारे...बादलों का रथ तुम्हारा...कहां बनाओगे घर...कहां करोगे बसेरा...। तुम्हारी हथेलियों को छूते हुए जमीं का खुरदरापन भूल गया...एक सपना उतर आया हाथ थामने...अब हाथ देखता हूं...सपना हाथ में नहीं है...आसमां अब भी खुला है...अगर लौट सको तुम...।

जमीं पर रहते हुए परों की जरूरत नहीं...यह जानकर राहत सी है मुझे...इन दिनों...

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoF-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

82 वां पन्ना

गलना होता है सांचे में ढलने से पहले...जो गला नहीं, ढला नहीं...। पानी था...ढल ही जाता, सर्द रिश्ते ने जमा न दिया होता जो...। बर्फ गलने के इंतजार के सिवा चारा नहीं था...इंतजार गवारा नहीं था...। चिपचिपाते संबंधों के साथ मैल सा उतर गया प्रेम...तीखी धूप के दिनों में...हवा में नमी बढ़ने केबाद बेमानी है उमस की शिकायत...।शिकायत रही तुम्हें...नहीं दे सके मनचाहा आकार...हर सांचे का मुंह खुला रहा और औजारों पर धार बनी रही...। बना भी लेते मनचीता...तय ही न कर सके तुम...कि बनाना क्या था...।

निराकार नहीं था मैं...बस मेरा आकार तय न हो सका...

amnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-20

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वां पन्ना

आरी के तेज दांतों से कटती है रात...और हां, कट जाता है दिन भी तुम्हारे बिना...बस...धीरे-धीरे काटना होता है तेज धार के चाकू से...सांझ होते-होते कट ही जाता है...। हर दिन बढ़ती जाती है धार चाकू की...ढेर हो गया है काटे गए दिनों का...पता नहीं कितने बाकी हैं अभी...खीझ बस इतनी कि इस ढेर के नीचे दबा रह गया तुम्हारा हरा दुपट्टा...जिसे रखा था ढेर ढंक देने को...खींचने की कोशिश पर खड़खड़ाते हैं अधकटे दिन...बची सांसों की आवाज़ डराती है...देखना किसी दिन काट डालेंगे मुझे ये कटे हुए दिन...यूं भी अक्सर छिल जाती हैं उंगुलियां...चाकू की धार से...।

याद तेज चाकू है...पर छिले हाथ का दर्द भी कोई दर्द है...होता है इतना तो...

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

84 वां पन्ना

तुमने कहा, कहां गया वो पहले वाला प्रेम...पता नहीं उलाहना दिया...या पूछा...बस...। सच...मुझे कुछ पता नहीं...तुम ही भूल जाते हो सब कुछ रखकर कहीं इधर-उधर...। बीच रास्ते में कहीं गिर ना गया हो...तुम ठहरते तो जाकर देख भी आता...। जिस रास्ते से आता है, उसी से लौट भी जाता है कई बार...कहीं बस पैरों के निशान दिख जाते तो ढूंढ लेता...। एक बार तुम भी देख लेते अपनी आलमारी...वहीं उस खिड़की के पास...जिससे अक्सर झांककर देखते थे तुम मुझे...हो सकता है मैंने भी कहीं देखा हो...मैं भी तो चीजें रखकर भूल जाता हूं...आजकल...।

तुम्हें पक्का पता है ना, कि तुमने दिया था मुझे...

amnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-20

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वां पन्ना

समन्दर लिख तो दूं तुम्हारे कहने से...समन्दर लिखने से जीभ पर नमक आता है...। लहरों को एक बार छूने की जिद किनारों पर घर नहीं बनाने देती...लहर एक अनंत यात्रा की शुरुआत है...किनारे खड़े होकर डूबते सूरज को देखना, तुम्हारे लिए रोमांच था...पर बीच समन्दर डूबने वाले की आखिरी उम्मीद तोड़ देता है...तल तक पहुंचने वाले...हरेक के हिस्से में मोती नहीं आते...। सागर ने उलीच दी जो खाली सीपियां...तुम्हें काफी लगीं घर सजाने को...इतनी सी ख्वाहिशें तो किनारे पर ही पूरी हो जाती हैं...मैं तो समन्दर लिखने चला था...बेहिसाब मोतियों...सुर्ख लाल मूंगों...की तलाश में...तुम्हारे लिए...।

सीपियों में समन्दर है जितना...बस इतना था मैं...

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

86 एक मुट्ठी रोशनी की उम्मीद

वां पन्ना

इतने बरसों में...ना मेरे सवाल बदले...ना तुम्हारे जवाब...यूं तो बदलाव की हवा बहुत थी, जाने क्या क्या बदल गया...। अजर-अमर नहीं थे कि धूप जला ना पाती...बरसात भिगोती ना और सुखाकर नमी ना सोख लेती हवा...।खरोंच दिए गए, काट दिए गए...तोड़ दिए गए सवालों के बाद...जिनमें सांस बची...उन्होंने जारी रखा सफर...सफर रास्तों में नहीं...पांवों में होता है...जलती पगतलियां रास्ता बदलती रहीं...घिसी एड़ियां ढूंढती रहीं जवाब...जिन्हें पहले से वहां रख दिया गया था तुमने...बीच रास्ते...। इतने भर से तसल्ली है मुझे...मेरे सवालों ने राह में नहीं, तुम तक पहुंचने के बाद दम तोड़ा...।

मुर्दा सवालों को अब भी जवाब के कफ़न का इंतजार है...दूर श्मशान में जो जल रहे हैं, वे सवाल नहीं हैं...कुछ और होगा...

amnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-20

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वां पन्ना

याद है तुम्हें...पहली बार तुम्हारी हथेलियों को छुआ जब...यहीं इसी किनारे पर... अब भी खड़ा हूं छुअन की नमी सहेजे हुए...। हमारे बीच बहती थी एक नदी...मुझे नहीं पता किनारा वह था कि यह है...नदी का नाम नदी होने से नमी नहीं मिलती तो गंगा कहने से भी कहां मिलेगी...। पानी में बहते तिनके का नामकरण नहीं होता...तिनका है...वह बहता है बस...जो बहता है, वही बहता है...। लहरों पर लिखा हर नाम धो दिया नदी ने...मैंने हर बार सिर्फ पानी पढ़ा...पानी से बाहर नहीं जाती नदी...नदी से बाहर भले ही चला जाए पानी...कि जो बहे...वह तिनका, जो बहा ले जाए वह नदी...नदी में नदी क्यूं नहीं बहती...तुम्हारी हथेलियां छूकर बस यही पूछना चाहता था...।

पूछने की मोहलत मिलने तक...कितना पानी बह गया गंगा में...तिनके भी तो बहे होंगे...पर किसे याद है...

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

88 एक पुल शंकर ने बनाया

वां पन्ना

पहाड़ से बेदखल नदी सिर्फ किताबों में कल-कल करके बहती है...पैर पटकती उतरती है ज़मीन पर...तमतमाती... हहराती हुई...। नीले नक्शों पर पेन्सिल घुमाकर बता सकते हो कहां से कहां जाती है...कैसे बहती है, नहीं दिखा सकती कोई मोटी या पतली लकीर...। नदी और नाव के संबंधों के बीच सिर्फ पानी नहीं होता...तनातनी भी होती है काठ और लहर की ठाठ के बीच...नाव के पांव नहीं होते और नदी की धार पर सड़क नहीं बनती...। पानी में चलना होता है...डूबकर कि तैरकर...। शायद... नक्शे में नीली नदी देखकर चले आए थे तुम नौका विहार करने...चाहो तो अफसोस कर सकते हो अपने फैसले पर...दूसरे पर भरोसा तो भरोसा है, जाने कब टूट जाए... चप्पुओं पर हो कि हाथ की लकीरों पर...अपने फैसले पर भरोसा होता तो और बात थी...।

डूबने की कहते रहे...पर हाथ भी चलते रहे...पैर भी...

amnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-20

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

89 एक जुनूने ख़ुदा की डायरी

वां पन्ना

गुनगुने पानी में उबाल आया और देखते ही देखते बर्फ हो गया सब...यह कौनसा विज्ञान था, समझ नहीं सका...। तुमने कहा मौसम की साजिश है...मैं निहत्था...मौसम से लड़ता रहा...कलाइयों पर खरोंचों के जख़्म...गवाह हैं...अभी फैसला मेरे हक में न सही, खिलाफ़ भी नहीं हुआ...लगातार भीगते हुए...माथे पर सूरज तप रहा है और हाथ जकड़ रखे हैं सर्द हवाओं ने अब तक...। जहां जलन ज्यादा है वहीं है सर्द जकड़न...मैंने हवाओं में आग देखी...पर आग को हवा न दी...बदल गया मौसम तो जरूर कुछ वजह रही होगी...यकीन करो मैंने नहीं बताया इसे कुछ भी...तुमसे मिलकर लौटते हुए...कि न लौट आने के लिए...लौट गए हो तुम...।

हर बार पर तुम्हारी आवाज़ निकली...पता नहीं तुम मेरी ओर थे या मौसम की...

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वां पन्ना

बरसों हवा में तलवारें भांजते रहने के बाद समझ आया...हार और जीत का कोई अर्थ नहीं...अर्थ सिर्फ इतना कि...जो कट गया...सो कट गया...। खून नहीं बहा फर्श पर...हथेलियों पर नहीं है कोई धब्बा जमे हुए खून का...पर दाग का क्या...दाग तो पानी के भी रह जाते हैं...सब कट जाने के बाद मेरे पास बचा हुआ विकल्प बस यह...कि तुम्हारे कहे पर ही विश्वास कर लूं कि...उसने खुद को कुचल डाला होगा...तुमने नहीं किया विश्वास का खून...तुम कहते हो ...तो ठीक ही कहते होंगे...पर इन धब्बों का क्या करूं...मैं फर्श पोंछ-पोंछ कर थक गया हूं बस...।

विश्वास की आत्मकथा...आत्महत्या की तरह पढ़ी जाएगी अब...

amnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-20

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

91 एक चुप्पे इश्क़ की डायरी

वां पन्ना

याद है...वो छोटी सी चिड़िया...जिसे बहुत बार छूना चाहा तुमने...हर बार उंगुलियों की हरकत भर से डर गई जो...जिसका नाम रखने को लेकर बहुत देर तक लड़े थे हम...चितकबरे पंखों की खूबसूरती पर हमेशा कुर्बान रहे तुम...। पता है पंखों की खूबसूरती उनके रंग में नहीं...उनकी उड़ान में थी...आमसान घुट जाने के बाद समझ आया मुझे...मैंने उस दिन के बाद उसे दाना चुगते नहीं देखा...जीती कैसे होगी फिर भला...पर चिड़िया के सामने कहां हैं इतनी अनिवार्यताएं जीने की...मन हुआ तो चुगा...न हुआ तो न हुआ...उसे कहां सफाई देनी होती है अपने हर काम की...। सुनो... आज सुबह वहीं उसी जगह उसके पंख नुचे हुए मिले...उनमें चितकबरा रंग अब भी था...बस उड़ान नहीं थी...ओह...मुझे नहीं पता था...तुम्हें इतने अच्छे लगे थे उसके चितकबरे पंख...।

उस चिड़िया में जाने किसके प्राण बसते थे...

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

92 वां पन्ना

एक चुप्पे गुलमुहर की डायरी

तपते माथे पर हाथ रखकर हर लिया ताप...पल भर को पास बैठने से महकता रहा दिन...मुस्कुराहटों को शब्द मिले और शब्दों को मुस्कुराहट...दूर तक फैले सन्नाटे में सुना वही...जो तुमने कहा...दिखा वही...जो तुमने दिखाया...। जादू...जादू होता है...दिखता नहीं...दिखता है जादू का होते जाना...आसमान में तैरा जा सकता है और जमीन पर उड़ना हो जाता है जादू भरे दिनों में...तुम्हारे स्पर्श में जादू...तुम्हारे होने में जादू...तुम्हारे देखने में जादू...तुम्हारे शब्दों में जादू...। हर बार मुस्कुराकर कहते थे तुम...जादू बस इक शब्द है...। ...तपते गरम दिनों की सूखी हवा में...आंख भर रेत...और सांस भर आग...नंगे पैर चलना उन्हीं सड़कों पर...जहां गरमी में कोलतार पिघलता है...जान रहा हूं अब...सब जादू ही तो था...।

जादू बस एक शब्द था, जब तक तुम्हें देखा नहीं था...

amnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-20

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

रात नहीं थी...आंखों में जमा हुआ अंधेरा था...बूंद-बूंद...। जमा हुआ अंधेरा जमा पूंजी की तरह होता है...जिसमें उजाला खनकता है पर दिखता नहीं...। ठहरा हुआ कालापन तुम्हारी गति को रोक नहीं सका...सुबह की पहली किरण पाने के लिए...पुल पर से लगभग उड़ते हुए चलते तुम्हारी गति का समीकरण किसी किताब में नहीं मिला...इसी पुल के नीचे ठहरी हुई थी रात, दुबकती...कोने तलाशती...तुमने ठहरना सीखा होता तो रात तुम्हें सुबह तक पहुंचने का ठीक ठीक रास्ता बता सकती थी...चलने के लिए रुकना जरूरी है...तुम्हें कौन समझाता...। ...तुम्हारे बाकी रहे सवालों का जवाब भोर के तारे से पूछना...जो आता है सबके चले जाने पर...प्रेम एक लंबा अनुभव है समझौतों का...भोर का तारा है...रात गुजर जाने के बाद आता है...।

दहलीज़ पर खड़ी रात का इंतजार, तुम्हें समझ आए तो भोर के तारे को बताना...

amnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-20

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वां पन्ना

भरोसा भर उम्र होती है खुशियों की...। ...तुमने खुशियां दीं हमेशा...हर बात से...पर...कितनी...बे-भरोसा होती हैं बातें... देखो ना जिस बात पर उस दिन इतना खुश थे हम...आज उसी बात पर मैं कितना उदास हूं...। खुशी ही उदासी है, यह जानने के लिए हर दिन उधेड़ना पड़ा...खुद को...उदासी की सीवन के नीचे...खुशियां ही थीं...बस भरोसा टांकना भूल गए थे तुम...। तुम्हारे भरोसे पर किया गया भरोसा जिन धागों में उलझा रह गया...वे आज भी मेरी पीठ से बंधे हैं...खुशियां उदासियों से बंधी हैं कि उदासियां खुशियों से...पता नहीं...हां पता है बस इतना कि पीठ के पीछे हाथ बांधकर भरोसे को पकड़ने का खेल गहरे भरोसे पर टिका है...।

एक उदास खुशी दरवाजे पर खड़ी हमेशा पूछती है, मुझ पर भरोसा करते हो...?

Jammigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-20

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वां पन्ना

भाग्य पर टिके संबंधों ने दुर्भाग्य को भूमिका की तरह स्वीकार किया...सौभाग्य उपसंहार में लिखा होगा...जहां पहुंचने से पहले उम्मीदों में हजारों मोड़ थे...कहीं तुम मुड़े...कहीं मुझे मुड़कर देखना था...पीड़ाएं जो साझी थी, निजी होती गई...उल्लास जो सामूहिक थे, व्यक्तिगत होते गए...। समय तेज धार के साथ काटता रहा बीच की सड़क, जिससे गाहे बेगाहे आ जाते थे तुम इस तरफ...आदत या अभ्यासवश...।जितने वादे थे उससे कहीं ज्यादा थीं अफवाहें...प्रेम की इस परिणति पर कविताएं लिखी गईं और संबंधों पर कहानियां...। आदतें, अभ्यास और दुर्भाग्य किसी के पात्र नहीं थे, वे अपनी जगह बने थे...बने रहे...बने हुए हैं...तुम्हारे सारे वादों के साथ...।

संबंध वादे की तरह निभाए...वादों का संबंध जैसा होना था, है...

amnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-20

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

96 वां पन्ना

जी सकने जितनी ना सही, जीने की कोशिश जितनी सही...आजादी थी...। बांधा नहीं हमने एक दूसरे को...ना कसमों से...ना रस्मों से...। तो क्या था जिसने मुक्त करने के लिए बांध लिया...जिसने बांधकर मुक्त करने का दावा किया...मुक्ति के रास्तों में से एक चुनना एक दिखावटी विकल्प है...चलना इस पर...बंधना उससे...चुनना यह कि बिखरना है कि घुटना...। घुटते हुए बिखर जाने को प्रेम कहूं कि बिखरते हुए घुट जाने को संबंध...। मुक्ति घुटना है कि बिखर जाना...तुमने दोराहे दिए...रास्ता कोई भी चुनता...बंधना तय था...छोड़ दिए गए रास्ते से...जो छोड़ देने के बाद साथ चलता रहा...उम्र भर...कि उस रास्ते पर चले होते तो...।

रस्सियां तोड़कर हँसा तो जा सकता है, उनसे छूटा नहीं जा सकता...

amnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-20

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वां पन्ना

जिसने भी रखा होगा...हवा का नाम हवा...पानी को जिसने भी कहा होगा पानी...किस नाम से पुकारा होगा उसने तुम्हें...मुझे नहीं पता...। इतना पता है...तुम्हें हवा कहा...मैंने सांस ली...पानी कहा, भीग गया...। आसमान कहने को हुआ...मैंने पंख पसार लिए...। पंख पसारे हुए...सांसों के भीगने से पुकारा जो भी नाम...जरूर तुम्हारा वही नाम होगा...। सब बार-बार पूछते हैं मुझसे...मैंने कभी नहीं पूछा तुमसे तुम्हारा नाम...तुम्हारा नाम कुछ भी होता...सांस भर हवा...भीगने जितनी नमी...या उड़ने के ख्वाब जितना आसमान...। नाम कुछ भी हो...जो भी...जिसका भी...जब भी कोई नाम पुकारता हूं...होना तुम्हें ही होता है वहां...।

खामोशी टूटने से पहले आती लंबी गहरी सांस...कि तुम्हारा नाम होंठों पर आकर ठहर गया है...

amnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-20

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वां पन्ना

मुझे ठीक से पता है डायरी के पन्ने पलटने से नहीं पलट आते दिन...पर नहीं पलटने से भी तो नहीं पलटते...उलट गया जो...उसे पलटकर देखता हूं बस...बेतरतीब फैले सामान को उलटने-पलटने से दिखा...एक टुकड़ा फिरोजाबादी चूड़ी का...एक काजल की डिबिया...एक फूल कढ़ा रुमाल...और हरे दुपट्टे के कोने की गांठ में बंधा कोरे कागज़ का पुरजा...जिसमें बरसों पढ़ता रहा मैं तुम्हारी छुअन...उंगुलियों के पोरों से लिखा इकलौता प्रेम-पत्र...जिसे उलटता हूं तो कोरा है और पलटते ही पलट जाती है मेरी दुनिया...। डायरी के पन्ने पलटना...खत को हजार बार पढ़ना है...। अच्छा है, इस खत में शब्द नहीं हैं...हर बार कुछ नया पढ़ता हूं...पुराने दिनों में...।

जाते जाते पलटकर देखा तुमने...तो समझ आया...कितना कुछ पलट जाता है...पलटने भर से...

amnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-20

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

99 वां पन्ना

गोबर लिपे आंगन में खिंची रेखाओं पर अधगुंथे जौ के आटे के लौंधे...कुशा...घास के कुछ तिनके...काले तिल...और बुदबुदा भर दिए गए मंत्रों के बीच...कच्चे दूध से तर्पण...यह मेरा अंत नहीं प्रिय...तुमने स्पर्श भर से दिया है जो...उस जीवन की शुरुआत है...जाने के बाद तक रहेगी खुशबू...बहुत मुश्किल है जान पाना...अलगा पाना ...कौनसी खुशबू तुम्हारी है...कौनसी मेरी...न मिले हम...न सही...खुशबुएं पूरा करेंगी हमारा मिलना...।

एक घुली-मिली खुशबू है हमारा प्रेम...कुछ तो महकेगा इससे...घर-आंगन ना सही...कोई रास्ता सही...

amnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-20

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हर डायरी की नियति है...अधूरा रह जाना

amnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-20

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

amnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-20

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक बुरे शख्स की डायरी : मंटो

यह डायरी जैसी डायरी नहीं है...मुझे खुद नहीं पता इसे किस विधा के खाचे में फिट किया जाए। सब कुछ बेतरतीब...कुछ भी तय नहीं। यह जीवन के कुछ पन्ने हैं...यह भी नहीं कह सकता किसके जीवन के...मेरे...किसी के...या आपके!

₹ 50.00
ISBN : 978-93-83150-08-3
9 789383 150083
बोधि
आवरण संयोजन : तरु टीम

amnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-20